राजस्थान बोर्ड परीक्षा 2019–20
10वीं कक्षा
हिन्दी
मॉडल पेपर–8

समय : $3\frac{1}{4}$ घंटे **(पूर्णांक : 80)**

परीक्षार्थियों के लिये सामान्य निर्देश :–

1. परीक्षार्थी सर्वप्रथम अपने प्रश्न–पत्र पर नामांक अनिवार्यतः लिखें।
2. सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं।
3. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दी गई उत्तर–पुस्तिका में ही लिखें।
4. जिन प्रश्नों में आन्तरिक खण्ड हैं, उन सभी के उत्तर एक साथ ही लिखें।

खण्ड–अ

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

हमें स्वराज्य मिल गया परंतु सुराज्य अभी हमारे लिए स्वप्न ही है। इसका प्रधान कारण यह है कि देश को समृद्ध बनाने के उद्देश्य से कठोर परिश्रम करना अभी तक हमने नहीं सीखा है। श्रम का महत्त्व और मूल्य हम जानते नहीं हैं। हम आज भी आरामतलब हैं। हमें हाथों से थयेष्ट काम करना अच्छा नहीं लगता। हाथों से काम करने को हम हीन मानते हैं। हम कम–से कम काम करके ज्यादा लाभ चाहते हैं। हम यह सोचते रहते हैं कि किस तरह काम से बचा जाए। यह दूषित मनोवृत्ति राष्ट्र की आत्मा में जा बैठी है और वहाँ से हटती नहीं। यदि हम इससे मुक्त नहीं होते और आज समाज में जितना हम पा रहे हैं या पा लेना चाहते हैं, उससे कई गुना अधिक अपने कठोर श्रम से नहीं देते, तो देश आगे नहीं बढ़ सकता और स्वराज्य सुराज्य में परिणित नहीं हो सकता।

1. प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर :
गद्यांश का उचित शीर्षक – स्वराज्य बनाम सुराज्य।

2. सुराज्य कैसे बनता है? 1

उत्तर :
देश को समृद्ध करने के लिए कठोर परिश्रम करने से सुराज्य बनता है।

3. दूषित मनोवृत्ति क्या है? 2

उत्तर :
हमारी दूषित मनोवृत्ति यह है कि हम कम–से कम काम करके अधिक–से–अधिक लाभ उठाना चाहते हैं।

निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

जिस दिन मेरी चेतना जगी मैंने देखा,
मैं खड़ा हुआ हूँ इस दूनिया के मेले में,
हर एक यहाँ पर एक भुलावे में भूला,
हर एक लगा है अपनी अपनी दे–ले में,
कुछ देर रहा हक्का–बक्का, भौंचक्का सा–
आ गया कहाँ, क्या करूँ यहाँ जाऊँ किस जा?
फिर एक तरफ से आया ही तो धक्का–सा,
मैंने भी बहना शुरू किया उस रेले में,
क्या बाहर की ठेला–पेली ही कुछ कम थी,
जो भीतर भी भावों का ऊहा–पोह मचा,
जो किया, उसी को करने की मजबूरी थी,
जो कहा वहीं मन के अंदर से उबल चला।
जीवन की आपा–धापी में कब वक्त मिला
कुछ देर कहीं पर बैठ कभी यह सोच सकूँ,
जो किया, कहा, माना उसमें क्या बुरा–भला।

4. इस पद्यांश का केन्द्रीय भाव है 1

उत्तर :
इस पद्यांश का केन्द्रीय भाव है **जीवन की आपा–धापी में**

5. **अपनी–अपनी दे–ले** का आशय है– 1

उत्तर :
अपनी–अपनी दे–ले का आशय स्वार्थ साधना है।

6. यह काव्यांश प्रेरित करता है– 2

उत्तर :
यह काव्यांश आत्मवलोकन के लिए प्रेरित करता है

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

खण्ड–ब

7. दिए गए बिन्दुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए। 8

1. स्वदेश प्रेम
   (क) प्रस्तावना
   (ख) देश प्रेम का अर्थ
   (ग) देश प्रेम एक स्वाभाविक गुण
   (घ) देश प्रेम क्यों ?
   (ड़) भारतीयों के देश प्रेम के कुछ उदाहरण
   (च) देश प्रेम का संकुचित अर्थ
   (छ) उपसंहार
2. हमारे राष्ट्रीय पर्व
   (क) प्रस्तावना
   (ख) स्वतंत्रता दिवस
   (ग) गणतंत्र दिवस
   (घ) गाँधी जयन्ती
3. यदि मैं भारत का प्रधानमन्त्री होता
   (क) प्रस्तावना
   (ख) सुरक्षा एवं विकास
   (ग) सामाजिक समरसता
   (घ) उपसंहार
4. नारी सशक्तीकरण
   (क) नारी सशक्तीकरण से आशय
   (ख) वर्तमान समाज में नारी की स्थिति
   (ग) नारी सशक्तीकरण हेतु किए जा रहे प्रयास
   (घ) देश की प्रमुख सशक्त नारियों का परिचय
   (ड़) उपसंहार

उत्तर :

1. स्वदेश प्रेम

(क) **प्रस्तावना –** देश प्रेम असल में महान् एवं पवित्र भावना है। यह वह पवित्र गंगा है जिसमें गोता लगाने से हमारा तन ही नहीं, अपितु मन भी पवित्र हो जाता है। जिस देश की धरती की धूल में लोट–लोट कर हम बड़े हुए हैं उस देश की धरती से, वहाँ के कण–कण से प्रेम होना चाहिए। वास्तव में देखा जाए तो देश प्रेम ही सबसे बड़ा प्रेम है।

(ख) **देश प्रेम का अर्थ –** देश प्रेम का अर्थ है–देश से प्यार अर्थात् देश की धरती पर स्थित पहाड़, नदियाँ, जंगल, पशु–पक्षी, वस्तुएँ तथा मनुष्य सभी से प्रेम ही देश प्रेम कहलाता है। देश की सभ्यता और संस्कृति के प्रति प्रेम भी देश प्रेम ही होता है।

(ग) **देश प्रेम एक स्वाभाविक गुण –** देश प्रेम मानव का एक स्वाभाविक गुण है। यह गुण तो पक्षियों और पशुओं में भी विद्यमान है। पक्षी पूरे दिन दाने–दाने की तलाश में न जाने कहाँ–कहाँ घूमता है परन्तु सांयकाल अपने नीड़ में ही पहुँचता है। उसे भी मातृ–भूमि से प्रेम होता है।

(घ) **देश प्रेम क्यों ? –** देश की उन्नति के लिए स्वदेश प्रेम अति आवश्यक है। जिस देश के निवासी अपने देश के हित में अपना हित, अपने देश के दुःख में अपना दुःख तथा अपने देश की समृद्धि में अपनी समृद्धि नहीं समझते हैं वे देश और राष्ट्र कभी उन्नति के शिखर को प्राप्त नहीं कर सकते। जापान, जर्मनी आदि इसीलिए प्रगतिशील राष्ट्र माने जाते हैं क्योंकि वे प्रत्येक कार्य राष्ट्र के हित में करते हैं।

(ड़) **भारतीयों के देश प्रेम के कुछ उदाहरण –** भारत में ऐसे लोगों की कमी नहीं रही जो अपने देश प्रेम को अपने जीवन से भी बढ़कर समझते थे। सर्वप्रथम जब लक्ष्मण ने श्रीराम को सोने की लंका में रहने के लिए कहा तो श्रीराम ने उत्तर देते हुए कहा था कि यह तो केवल सोने की लंका है। मुझे तो मेरी जन्म–भूमि स्वर्ण से भी अधिक अच्छी लगती है।

चन्द्रगुप्त के नेतृत्व में सभी राजाओं ने मिलकर सिकन्दर के विश्व–विजय के स्वप्न को पूरा नहीं होने दिया। इस प्रयास के पीछे उनका देश प्रेम और देशभक्ति ही कार्यरत थी। मुगल शासनकाल में महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, छत्रसाल और गोविन्द सिंह अत्याचारी शासन के विरुद्ध लड़ते रहे। अंग्रेजों के शासनकाल में स्वाधीनता–संग्राम के वीरों ने देशभक्ति के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। भारतीय वीरांगना झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, लाला लाजपतराय, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, राजगुरु, सुखदेव, महात्मा गाँधी, पं. जवाहरलाल नेहरू, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस आदि वीरों ने देश के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया।

(च) **देश प्रेम का संकुचित अर्थ –** आज देश का अर्थ कुछ संकुचित होता जा रहा है। कुछ लोग अपने प्रदेश, अपने धर्म और अपनी भाषा तक ही सीमित रहते हैं। वे अपने देश से प्रेम नहीं करते। अपने ही देशवासियों को अछूत और पतित कहकर उनके प्रति घृणा व्यक्त करते हैं। यह देशभक्ति नहीं है। उन्हें याद रखना होगा कि भारत कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक एक देश है। नेहरू जी का कथन है, **यदि भारत ही न रहा तो हममें से कौन जीवित रह सकता है और यदि भारत जीवित रहता है तो हममें से कौन मर सकता है।**

(छ) **उपसंहार –** देश के प्रति अपने कर्त्तव्य का भली–भाँति पालन करना ही देश के प्रति निष्ठा और देशभक्ति है। यदि सभी नागरिक अपने कर्त्तव्य का पालन करे तो यही उनका सच्चा देश प्रेम या सच्ची देशभक्ति होगी।

2. हमारे राष्ट्रीय पर्व

(क) **प्रस्तावना –** भारतवर्ष पर्वों का देश है। यहाँ वर्ष भर सामाजिक और राष्ट्रीय पर्व मनाए जाते हैं। भारतवर्ष अनेकता में एकता वाला देश है। यहाँ विभिन्न जातियों और धर्मों के लोग रहते हैं। यही कारण है कि यहाँ लोग अपनी जाति व धर्म से संबंधित पर्वों को बड़े उत्साह और उमंग के साथ मनाते हैं। ऐसे पर्वों को हम सामाजिक पर्व कहते हैं, किन्तु कुछ पर्व ऐसे हैं जिन्हें सभी धर्मों के लोग एकजुट होकर मनाते हैं। पूरा राष्ट्र इन पर्वों को पूर्ण निष्ठा के साथ मनाता है। राष्ट्रीय पर्वों के अंतर्गत स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस और विभिन्न राष्ट्रीय नेताओं के जन्म–दिन आते हैं। इन पर्वों का महत्त्व इसलिए सबसे अधिक है कि ये पर्व सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने का कार्य सफलतापूर्वक करते हैं।

(ख) **स्वतंत्रता दिवस –** हमारे राष्ट्रीय पर्वों में से सबसे पहला पर्व है–स्वतंत्रता दिवस। भारत को 15 अगस्त, 1947 को लंबे संघर्ष के बाद स्वतंत्रता मिली थी। इसलिए 15 अगस्त को यह पर्व सम्पूर्ण देश में बड़ी धूम–धाम से मनाया जाता है। स्वतंत्रता–दिवस को

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें। आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाऐंगे।

मनाने के लिए विभिन्न प्रकार के आयोजन किए जाते हैं जैसे– राष्ट्रीय ध्वज का आरोहन करना। इस दिन भारत के प्रधानमंत्री देशवासियों को राष्ट्र–संदेश देते हैं। इसके अतिरिक्त नाटक, संगीत, नृत्य आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं। सभी सार्वजनिक कार्यालयों पर भी तिरंगें फहराए जाते हैं। इस दिन लाल किला पूर्ण रूप से सजाया जाता है। इस दिन देश की स्वतंत्रता के लिए प्राणों का बलिदान देने वाले शहीदों को भी सम्मानपूर्वक स्मरण किया जाता है।

इस दिन आकाशवाणी एवं टेलीविजन पर भी कुछ कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। यह पर्व प्रत्येक भारतीय नागरिक को प्रसन्नता प्रदान करता है। इस पर्व को मनाने से भावी पीढ़ी के हृदय में भी देशभक्ति की भावना जागृत होती है।

(ग) **गणतंत्र दिवस –** हमारा दूसरा राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र–दिवस है। यह पर्व 26 जनवरी को मनाया जाता है। इस दिन (26 जनवरी, 1950) भारतवर्ष का संविधान लागू किया गया। इसी दिन भारत को गणतंत्र राज्य की मान्यता मिली थी। यह शुभ दिन पूरे भारत में बड़े उत्साह एवं उमंग के साथ मनाया जाता है। दिल्ली में राष्ट्रपति की राजकीय सवारी निकाली जाती है। विजय चौक पर तीनों सेनाओं के सेनाध्यक्ष राष्ट्रपति को सलामी देते हैं। इस दिन पर अनेक झांकियाँ निकाली जाती हैं। अपने–अपने प्रांतों की वेशभूषा से लोक–नर्तक नृत्य प्रदर्शन से अपनी प्रांतीय संस्कृति का परिचय देते हैं। इस पर्व का महत्त्व इसलिए भी है क्योंकि इससे हमें देशभक्ति की भावना की प्रेरणा मिलती है।

(घ) **गाँधी जयन्ती –** हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने देश को स्वतंत्र करवाने के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था। उनकी याद में उनके जन्म–दिवस को राष्ट्रीय पर्व के रूप में बडी धूमधाम और उत्साह के साथ मनाया जाता है। मुख्य समारोह दिल्ली स्थित राजघाट पर और उनके जन्म स्थान पोरबंदर पर होते हैं। गाँधी के जन्म–दिन को छोटे–बड़े सभी नगरों में भी बड़ी श्रद्धा और निष्ठा से मनाया जाता है। इससे देश के नागरिकों में देशभक्ति की भावना और त्याग की भावना का संदेश मिलता है। इसी प्रकार स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू का जन्म दिवस भी राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाया जाता है। यह बाल दिवस के रूप में, हर वर्ष 14 नवंबर को मनाया जाता है। डॉ. राधाकृष्णन का जन्म–दिवस भी शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है।

3. यदि मैं भारत का प्रधानमन्त्री होता

(क) **प्रस्तावना –** व्यक्ति कल्पनाशील प्राणी है और प्रत्येक व्यक्ति अपने सुनहरे भविष्य की कल्पना करता रहता है। हमारे देश में लोकसभा के चुनावों में सफल रहने वाले बड़े दल के नेताओं में प्रधानमंत्री बनने की स्पर्धा दिखाई देती है। मैं भी कल्पना करता हूँ कि यदि मैं चुनाव में जीतकर लोकसभा का सदस्य बन जाता और सभी प्रतिनिधि मुझे देश का प्रधानमन्त्री चुन लेते तो कितना अच्छा होता। वैसे भी देश का प्रधानमन्त्री होना सौभाग्य एवं गौरव का विषय होता है। मैं प्रधानमन्त्री बनता तो देश का शासन जनता की आकांक्षाओं की तरह चलाने की प्रगति का नया मार्ग प्रशस्त करता।

(ख) **सुरक्षा एवं विकास –** यदि मैं प्रधानमन्त्री होता तो अपने राष्ट्र की सुरक्षा एवं विकास के लिए अथक इन लक्ष्यों को प्राथमिकता देता–

1. मैं देश की आर्थिक उन्नति के लिए प्रयास करता। इसके लिए ऐसी नीतियाँ बनाता, ताकि स्वावलम्बी भारत का निर्माण होने की नीति सफल हो सकती।
2. मैं देश में शिक्षा के स्तर में सुधार करता, रोजगारपरक तकनीकी शिक्षा पर अधिक जोर देता, ताकि नवयुवक पढ़–लिखकर स्वरोजगार चला सकें।
3. मैं आतंकवाद को जड़ से मिटाने का प्रयास करता तथा सीमा पर शत्रुओं के छद्म युद्ध को पूरी तरह से रोकता।
4. मैं देश में व्याप्त भ्रष्टाचार, कुशासन, गरीबी, आर्थिक विषमता, कालाबाजारी, मिलावटखोरी एवं अन्य सभी बुराइयों को जड़ से मिटाने का पूरा प्रयत्न करता।

(ग) **सामाजिक समरसता –** मैं युवा पीढ़ी को स्वावलम्बी बनाने, स्वरोजगार उपलब्ध कराने, बेरोजगारी से मुक्त करने, देश सेवा की भावना रखने तथा नैतिक मूल्यों के प्रति समर्पित रहने के लिए अग्रसर करता। समाज में जाति–पाँति, ऊँच–नीच एवं वर्ग–भेद को जड़ से मिटाने के साथ लोगों में भाईचारा स्थापित करने की योजनाएँ बनाता।

मैं प्रधानमन्त्री होता तो देश के बुजुर्गों के आदर–सम्मान का ध्यान रखकर ऐसे उपाय करता कि उनका शेष जीवन स्वस्थ एवं सुखमय व्यतीत हो, उन्हें कोई परेशानी न हो और वे देश के नवयुवकों के लिए आदर्श प्रेरणा–स्त्रोत बने रहें।

(घ) **उपसंहार –** इस प्रकार यदि मैं प्रधानमन्त्री होता, तो स्वतन्त्र भारत के अभ्युदय में अपना तन, मन और जीवन समर्पित करता। जनभावनाओं के अनुरूप देश की चहुँमुखी प्रगति के उपाय पूरी शक्ति से करता।

4. नारी सशक्तीकरण

(क) **नारी सशक्तीकरण से आशय –** स्वतन्त्रता एवं समानता की अवधारणा को लेकर वर्तमान में नारी सशक्तीकरण एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया बन गई है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें महिलाओं को पुरुषों के समकक्ष लाकर उनके प्रति होने वाले सभी प्रकार के भेदभाव को समाप्त करके उन्हें स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध कराने का प्रयत्न किया जाता है, ताकि वे अबला न रहकर आत्मनिर्भर एवं स्वावलम्बी बन सकें। अतः नारी सशक्तीकरण का अर्थ महिलाओं को पुरुषों के बराबर वैधानिक, राजनीतिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में निर्णय एवं सहभागी बनने का अधिकार देना है।

(ख) **वर्तमान समाज में नारी की स्थिति –** वैदिक युग के समाज में महिला सशक्तीकरण का स्वर्ण युग था। परन्तु आज बढ़ते शिक्षा स्तर में भी नारी की स्थिति शोचनीय है। महिलाओं के विरुद्ध दिनों–दिन बढ़ते अपराध के आँकड़े इसकी सत्यता प्रकट करते हैं। यद्यपि आज नारी विभिन्न क्षेत्रों में पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम कर रही है, फिर भी नारी उत्पीड़न की घटनाएँ निरन्तर बढ़ रही हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ की एक रिपोर्ट के अनुसार भारतीय महिलाएँ पोषण, साक्षरता व लिंगानुपात तीनों ही क्षेत्रों में अत्यधिक शोचनीय स्थिति में हैं। पुरुषों की अपेक्षा नारियों की साक्षरता का कम प्रतिशत है, उन्हें नौकरी के समान अवसर नहीं मिलते हैं, कार्यस्थलों पर कमजोर अबला मानकर उपेक्षा की जाती है।

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

(ग) **नारी सशक्तीकरण हेतु किए जा रहे प्रयास –** नारी सशक्तीकरण का प्रारम्भ संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 8 मार्च, 1975 को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस से माना जा सकता है। भारत में नारी सशक्तीकरण हेतु किए जा रहे प्रयास निम्नलिखित हैं–

1. संवैधानिक एवं कानूनी संरक्षण;
2. महिला विकास सम्बन्धी नीतियाँ एवं क्रियान्वयन, जैसे– स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन, राष्ट्रीय महिला आयोग, राष्ट्रीय महिला उत्थान नीति–2001 आदि;
3. महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक विकास हेतु कार्यक्रम, जैसे– महिला उत्थान योजना, स्वास्थ्य सखी योजना, किशोरी शक्ति योजना, कन्यादान योजना, राजलक्ष्मी योजना आदि;
4. राजनीतिक सशक्तीकरण के प्रयास।

(घ) **देश की प्रमुख सशक्त नारियों का परिचय –** हमारे देश में अनेक ऐसी नारियाँ हैं जिन्होंने सशक्त महिला का दर्जा प्राप्त किया है, जैसे– भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस की प्रमुख सोनियां गाँधी, आईसीआईसीआई बैंक की सीईओ चन्दा कोचर, लोकसभा की अध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन। इसी प्रकार वसुन्धरा राजे, ममता बनर्जी, सुषमा स्वराज, किरण बेदी, सानिया मिर्जा, बिछेन्द्रीपाल, साइना नेहवाल आदि महिलाओं के नाम भी सशक्त महिलाओं के रूप में लिए जा सकते हैं।

(ड़) **उपसंहार –** संक्षिप्त में कहा जा सकता है कि नारी सशक्तीकरण की दिशा में अनेक मजबूत कदम उठाये गए हैं। विभिन्न क्षेत्रों में आरक्षण व्यवस्था भी की गई है। फिर भी इस दिशा में अभी निरन्तर प्रयास अपेक्षित है।

8. स्वयं को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, जयपुर का छात्र राहुल मानते हुए अपने प्रधानाचार्य का ध्यान विद्यालय में बढ़ते जल–प्रदूषण की ओर आकृष्ट कर उसे दूर करने की सलाह देते हुए प्रार्थना–पत्र लिखिए। 4

उत्तर :

सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
जयपुर।

विषय : विद्यालय में बढ़ते जल–प्रदूषण को दूर करने के लिए।

मान्यवर,

उपर्युक्त विषय में निवेदन है कि इन दिनों हमारे विद्यालय में जल–प्रदूषण अत्यन्त चिन्तनीय स्थिति में पहुँच गया है। पीने के पानी के लिए जो सीमेन्ट की टंकियाँ रखी गई हैं, उनमें से एक टंकी का ढक्कन टूट गया है और दूसरी टंकी पर रखा हुआ ढक्कन कई दिनों से हटा हुआ है, जिससे पीने के पानी में धूल और कचरे का उड़कर गिरना स्वाभाविक है। विद्यालय के छात्र उसी गन्दे पानी को पीने के लिए मजबूर हैं। इसके साथ ही पेयजल के निकास के लिए जो नाली बनाई गई थी, वह भी जगह–जगह से टूट गई है। इस कारण पानी फैलकर वहीं जमा होकर कीचड़ बना रहा है।

इस दुर्गन्धयुक्त वातावरण में गन्दा पानी पीने से अनेक बीमारियाँ फैल जाने की आंशका है। आपसे अनुरोध है कि बढ़ते जल–प्रदूषण को अतिशीघ्र दूर करवाने की व्यवस्था करें, जिससे कि छात्र स्वच्छ जल पीकर अपने को स्वस्थ रख सकें और छात्रों में जल–प्रदूषण को लेकर बढ़ रही समस्या दूर हो सके।

आशा है कि आप छात्र और विद्यालय हित में मेरी प्रार्थना पर तुरन्त ध्यान देने की कृपा करेंगे।

सधन्यवाद!

आपका आज्ञाकारी छात्र,
राहुल
दिनांक : 10 जनवरी, 2018 कक्षा–10

अथवा

8. कार्यालय, प्रधानाचार्य श्री महावीर दिगम्बर उच्च माध्यमिक विद्यालय, सी–स्कीम, जयपुर की ओर से विद्यालय की वार्षिक पत्रिका **प्रतिभा** के मुद्रण हेतु निविदा आमंत्रण के लिए एक प्रारूप तैयार कीजिए।

उत्तर :

कार्यालय, प्रधानाचार्य श्री महावीर दिगम्बर उच्च माध्यमिक विद्यालय, जोधपुर।

क्रमांक : 1005–1015 दिनांक : 10 मार्च, 2018

निविदा सूचना

विद्यालय का वार्षिक पत्रिका **प्रतिभा** 2018 का प्रकाशन 15 मई, 2018 तक करना है, जिसके ऑफसेट मुद्रण हेतु सक्षम मुद्रकों से निविदायें 5 अप्रैल, 2018 को सांयकाल 3.00 बजे तक आमंत्रित की जाती हैं। विलम्ब होने से प्राप्त होने वाली निविदाओं पर कोई विचार नहीं किया जाएगा।

पत्रिका $20 \times 30/8$ के साइज में, 3000 की संख्या में, बढ़िया क्वालिटी के मैफलिथो कागज पर मुद्रित होगी। पत्रिका में सामग्री के 64 पृष्ठ और 20 पृष्ठ अन्दर बहुरंगी चित्रों के लिए होंगे, जो बढ़िया आर्ट पेपर पर छपेंगे।

पत्रिका का कवर पृष्ठ अच्छी क्वालिटी के कार्ड शीट पर चारों पृष्ठों सहित बहुरंगी होगा। निविदा स्वीकृति के बाद पत्रिका बीस दिन में मुद्रित करके देना आवश्यक होगा। इसके मुद्रण, कागज, आर्ट पेपर, कार्ड शीट, बाइंडिंग आदि पर होने वाले कुल व्यय का विवरण देते हुए निविदा प्रस्तुत करें। यदि आपके यहाँ से पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएँ हों हुए निविदा प्रस्तुत करें। यदि आपके यहाँ से पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएँ हों तो उनकी अलग–अलग वर्षों की दो प्रतियाँ भी संलग्न करें।

विशेष जानकारी के लिए विद्यालय कार्यालय से सम्पर्क करें। कागज, आर्ट पेपर और कार्ड शीट के नमूने भी संलग्न करें।

(क, ख, ग)
प्रधानाचार्य,
श्री महावीर दिगम्बर उच्च माध्यमिक
विद्यालय, जोधपुर।

खण्ड–स

9. अधिराज गृह कार्य करता हैं। वाक्य में कौनसी क्रिया है? उसकी

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें।
आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाऐंगे।

परिभाषा लिखिए। 2

उत्तर :

वाक्य में सकर्मक क्रिया है। **परिभाषा–** जिस क्रिया के व्यापार या कार्य का फल कर्त्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।

10. निम्नलिखित कर्तृवाच्यों को भाववाच्यों में बदलिए– 3

1. हम इतना नहीं चल सकते।
2. सोहन हॉकी से खेल रहा है।
3. अब, चलें।

उत्तर :

1. हमसे इतना नहीं चला जाता।
2. सोहन द्वारा हॉकी से खेला जाता है।
3. अब, चला जाये।

11. 1. **वचनामृत** तथा **देवासुर** शब्द किस–किस समास के उदाहरण हैं?

2. द्विगु समास की परिभाषा तथा उसका एक उदाहरण दीजिए। 2

उत्तर :

1. **वचनामृत** कर्मधारय समास का तथा **देवासुर** द्वन्द्व समास का उदाहरण है।
2. जिस समय में पहला पद संख्यावाचक रहता है, वह द्विगु समाज होता है। जैसे– त्रिकोण, दुराहा।

12. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए। $1 \times 2 = 2$

1. बाहर क्या खड़ा है?
2. यह मेरे को मालूम नहीं।

उत्तर :

1. बाहर कौन खड़ा है?
2. यह मुझे मालूम नहीं।

13. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए। $1 \times 2 = 2$

1. ठिकाने तक पहुँचना
2. कोई जोड़ न होना

उत्तर :

1. **ठिकाने तक पहुँचना** (मंजिल तक पहुँचना)– डाकिए सभी पत्रों को ठिकाने तक पहुँचाते हैं।
2. **कोई जोड़ न होना** (मुकाबला न होना)– रेखा की लिखाई का कोई जोड़ नहीं।

14. ऊँची दुकान फीका पकवान – इस लोकोक्ति का अर्थ वाक्य में प्रयोग करके स्पष्ट कीजिए। 1

उत्तर :

आजकल के दुकानदार वस्तु घटिया होने पर भी सजावट व दिखावा जोरदार करते हैं। इसी को कहते हैं–ऊँची दुकान फीका पकवान।

खण्ड–द

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 6

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आयी फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन् सत्तावन में
वह तलवार पुरानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

उत्तर :

प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण सुभद्राकुमारी चौहान द्वारा रचित **झाँसी की रानी** शीर्षक कविता से लिया गया है। देश में आजादी के लिए प्रयास 1857 के प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन से ही शुरू हो गया था। उसी प्रसंग को लेकर कवयित्री ने यहाँ वर्णन किया है।

व्याख्या– कवयित्री कहती है कि अंग्रेजों को भगाकर देश को आजाद करने के लिए प्रयास सन् 1857 में सिपाही विद्रोह के रूप में शुरू होकर व्यापक हो गया था। अनेक देशी राजाओं ने अंग्रेजों के विरुद्ध बगावत की थी। इसके परिणामस्वरूप राजाओं का सिंहासन डोल उठा था। उसे देखकर ऐसा लगा था जैसे बूढ़े भारत में जवानी (जोश) आ गयी हो। जनता ने तब गई हुई अपनी आजादी का महत्त्व फिर से अनुभव किया था। सभी ने निश्चय कर लिया कि हमारे देश में शासन कर हमें गुलाम बनाए रखने वाले अंग्रेजों को भारत से दूर भगाना है। उससे पहले तो सन् 1857 में अंग्रेजों का विरोध शुरू हुआ था, इसी के लिए कवयित्री ने सन् सत्तावन के विद्रोह को पुरानी तलवार का चमकना कहा है।

कवयित्री कहती है कि सन् सत्तावन के विद्रोह के बारे में हमने बुन्देलखण्ड के हरबोलों द्वारा गाए जाने वाले गीतों में सुना था कि देशी राजाओं की तरह झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने भी 1857 के युद्ध में भाग लेकर वह भी मर्दों की तरह लड़ी थी।

विशेष–

1. कवयित्री ने यहाँ देश के अतीत के गौरव, अंग्रेजी शासन के विरुद्ध उठी क्रान्ति की भावना तथा देशी राजाओं के संघर्ष का संकेत दिया है।
2. भाषा सरल, ओज गुण से युक्त है तथा पद्यांश में क्रान्ति की भावना का चित्रण हुआ है।

अथवा

15. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

जाओ रानी याद रखेंगे हम कृतज्ञ भारतवासी,
यह तेरा बलिदान जगायेगा स्वतन्त्रता अविनाशी,
होवे चुप इतिहास, लगे सच्चाई को चाहे फाँसी,
हो मदमाती विजय, मिटा दे गोलों से चाहे झाँसी,
तेरा स्मारक तू ही होगी,
तू खुद अमिट निशानी थी।
बुन्देले हरबोलों के मुँह
हमने सुनी कहानी थी।

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

खूब लड़ी मर्दानी वह तो
झाँसी वाली रानी थी।

उत्तर :

प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण वीर रस की कवयित्री श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान द्वारा रचित **झाँसी की रानी** शीर्षक कविता से लिया गया है। यहाँ कवयित्री ने दिवंगत लक्ष्मीबाई के प्रति कृतज्ञता का भाव व्यक्त किया है।

व्याख्या– कवयित्री कहती हैं कि रानी लक्ष्मीबाई इस लोक से जा चुकी है लेकिन उसके महान् उपकार को हम भारतवासी याद रखेंगे। हम उनके प्रति आभारी हैं। उसने अपने प्राण देकर हम देशवासियों पर उपकार किया है। यह हो सकता है कि कभी इतिहास उसे वैसा महत्त्व न दे। भले ही सच्चाई को दबा दिया जाये और भले ही विजय प्राप्त करने वाले मद में चूर होकर यह सब कर बैठें, किन्तु रानी के बलिदान की कथा कभी समाप्त नहीं होगी। अंग्रेज झाँसी को गोलों से जड़ से समाप्त भले ही कर दें, किन्तु भारतवासी रानी को याद रखेंगे। रानी के कार्य स्वयं उसके स्मारक सिद्ध होंगे। उनको भुलाया नहीं जा सकेगा। कवयित्री कहती है कि हमने रानी के बारे में बुन्देले हरबोलों द्वारा गाये जाने वाले गीतों से जाना था। उनसे ज्ञात हुआ कि रानी बहुत मर्दानी, बहादुर, निडर थी और वह अपने शत्रु अंग्रेजों से बहादुर मर्दों की तरह खूब लड़ी थी।

विशेष–

1. कवयित्री ने लक्ष्मीबाई के द्वारा भारतवासियों पर किए गये उपकार के प्रति कृतज्ञता का भाव व्यक्त किया है और इतिहास की कमियों की ओर भी ध्यान केन्द्रित किया है।
2. वर्णन में मार्मिकता और गेयता है। भाषा ओज गुणयुक्त है।

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– 6

ईर्ष्या की बेटी का नाम निन्दा है, जो व्यक्ति ईर्ष्यालु होता है वही बुरे किस्म का निन्दक भी होता है। दूसरों की निन्दा वह इसलिए करता है कि इस प्रकार दूसरे लोग जनता अथवा मित्रों की आँखों से गिर जाएँगे और जो स्थान है उस पर मैं अनायास ही बैठा दिया जाऊँगा। मगर ऐसा न आज तक हुआ है और न होगा। दूसरों को गिराने की कोशिश तो अपने को बढ़ाने की कोशिश नहीं कही जा सकती। एक बात और है कि संसार में कोई भी मनुष्य निन्दा से नहीं गिरता। उसके पतन का कारण सद्गुणों का ह्रास होता है। इसी प्रकार कोई भी मनुष्य दूसरों की निन्दा करने से अपनी उन्नति नहीं कर सकता। उन्नति तो उसकी तभी होगी जब वह अपने चरित्र को निर्मल बनाए तथा गुणों का विकास करे।

उत्तर :

सन्दर्भ एवं प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में लेखक रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित **ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से** शीर्षक निबन्ध से अवतरित है। लेखक कहता है कि मनुष्य ईश्वर से प्राप्त वस्तुओं का आनन्द न उठाकर उन चीजों के लिए दुःख प्रकट करता है जो उसको प्राप्त नहीं हुई हैं। वह अपने अभावों पर प्रत्येक क्षण विचार करता है और कष्ट उठाता है। किसी मनुष्य को अपने से अधिक गुणी और सम्पन्न देखकर वह उससे ईर्ष्या करता है तथा उसकी बुराई करता है।

व्याख्या– लेखक कहता है कि निन्दा ईर्ष्या की बेटी है। आशय यह है कि ईर्ष्या से ही निन्दा का जन्म होता है। जो व्यक्ति ईर्ष्याग्रस्त होता है, उसको दूसरों की बुराई करने की आदत बन जाती है। इसी को निन्दा करना कहते हैं। वह समझता है कि किसी की निन्दा करके वह उसके दोस्तों अथवा जनता की दृष्टि में उसका सम्मान कम कर देगा। उनका सम्मान घटेगा तो वह सम्मान बिना किसी प्रयास के उसको प्राप्त हो जायेगा। उसकी ऐसी सोच लेखक की दृष्टि में सही नहीं है। ऐसा कभी पहले नहीं हुआ है और आगे भी नहीं होगा। दूसरों को गिराकर कोई भी मनुष्य आगे नहीं बढ़ सकता। दूसरी बात यह है कि किसी के द्वारा बुराई करने से कोई नहीं गिरता। अपने अच्छे गुणों को त्यागने के कारण ही मनुष्य दूसरों की नजरों में नीचे गिरता है। इसी तरह कोई मनुष्य दूसरों की बुराई करने से यश प्राप्त नहीं कर सकता। उन्नति का सम्बन्ध श्रेष्ठ गुण और पवित्र आचरण से होता है। मनुष्य अपने चरित्र तथा गुणों का विकास करके ही उन्नति कर सकता है, किसी गुणवान मनुष्य की बुराई करके नहीं।

विशेष–

1. ईर्ष्या से निन्दा की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है।
2. श्रेष्ठ और गुणी लोगों की निन्दा करके कोई मनुष्य उन्नति नहीं कर सकता।
3. सरल तथा विषयानुकूल और सजीव भाषा का प्रयोग हुआ है।
4. शैली विवेचनात्मक है। सूक्ति कथन शैली को भी अपनाया गया है, जैसे– **ईर्ष्या की बेटी का नाम निन्दा है।**

अथवा

16. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

ईर्ष्या का काम जलाना है मगर सबसे पहले वह उसी को जलाती है, जिसके हृदय में उसका जन्म होता है। आप भी ऐसे बहुत से लोगों को जानते होंगे जो ईर्ष्या और द्वेष की साकार मूर्ति हैं और जो बराबर इस फिक्र में लगे रहते हैं कि कहाँ सुनने वाला मिले और अपने दिल का गुबार निकालने का मौका मिले। श्रोता मिलते ही उनका ग्रामोफोन बजने लगता है और वे बड़ी ही होशियारी के साथ एक–एक काण्ड इस ढंग से सुनाते हैं मानों विश्व कल्याण को छोड़कर उनका और कोई ध्येय नहीं हो। अगर जरा अपने इतिहास को देखिए और समझने की कोशिश कीजिए कि जब से उन्होंने इस सुकर्म का आरम्भ किया है, तब से वे अपने क्षेत्र में आगे बढ़े हैं या पीछे हटे हैं। यह भी कि वे निन्दा करने में संयम और शक्ति का अपव्यय नहीं करते तो आज उनका स्थान कहाँ होता।

उत्तर :

संदर्भ व प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित **ईर्ष्या तू न गई मेरे मन से** शीर्षक निबंध से लिया गया है। इसके लेखक रामाधरी सिंह दिनकर हैं। दिनकर जी ने ईर्ष्या के दुर्गुण की विवेचना की है। ईर्ष्या का भाव मन में उत्पन्न होने पर मनुष्य दूसरों के पास उपलब्ध वस्तुओं को देखकर जलने लगता है। इस जलन की पीड़ा भी वह स्वयं ही सहन करता है।

व्याख्या– ईर्ष्या की प्रवृत्ति पर विचार करते हुए लेखक कहता है कि जलाना ईर्ष्या का काम है। सबसे पहले वह उसी मनुष्य को जलाती है जिसके मन में वह पैदा होती है। कुछ लोगों को ईर्ष्या करने की आदत बन जाती है। वे हर समय ईर्ष्या–द्वेष की बातें करते रहते हैं। उनको ऐसे लोगों की तलाश करने की चिन्ता रहती है जो उनकी द्वेषभरी बातों को सुन सकें और उनके अपने मन में भरी बुराइयों को बाहर निकालने तथा दूसरों की निन्दा करने का अवसर मिल सके। वे ईर्ष्या–द्वेष की जीती–जागती प्रतिमा होते हैं। लेखक याद दिलाता है कि ऐसे अनेक लोगों को हम भी जानते होंगे। ऐसे ईर्ष्यालु मनुष्यों को जैसे ही अपनी बातें सुनने वाला कोई व्यक्ति मिलता है, वे परनिन्दा का प्रवचन शुरू

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें।
आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाऐंगे।

कर देते हैं। वे उसकी बुराई करते हुए एक-एक घटना को चतुराई के साथ सुनाते हैं। वे ऐसा प्रकट करते हैं जैसे कि उसकी बुराई करके वे संसार की भलाई का कोई श्रेष्ठ काम कर रहे हों। लेखक चाहता है कि हम उनके जीवन का इतिहास देखें और यह जानने का प्रयत्न करें कि जब से उन्होंने परनिन्दा करने का यह सत्कर्म शुरू किया है, उन्होंने अपने जीवन में कितनी उन्नति की है अथवा वे पतन की ओर बढ़े हैं। स्पष्टतया वह इससे जीवन में कोई प्रगति नहीं कर सके हैं। यदि वे दूसरों की बुराई करने से स्वयं को बचाते और अपनी शक्ति इसमें नष्ट न करते तो निश्चय ही वे अपने जीवन में बहुत प्रगति करते।

विशेष-

1. दूसरों की निन्दा करने से मनुष्य को आगे बढ़ने में सहायता नहीं मिलती बल्कि उसका पतन ही होता है।
2. ईर्ष्या की आग में खुद ईर्ष्यालु ही जलता है।
3. सरल तथा विषयानुकूल भाषा का प्रयोग हुआ है।
4. शैली विचार-विश्लेषणात्मक है। उसमें वार्तालाप शैली का पुट है।

17. रानी लक्ष्मीबाई के युद्ध-कौशल का वर्णन कीजिए। 6

उत्तर :

रानी लक्ष्मीबाई स्वयं वीरता का अवतार थी। यद्यपि बचपन में सेना की घेराबन्दी करना, दुर्गों को तोड़ना, शिकार करना और शस्त्रों से खेलना उसके प्रिय खेल थे, लेकिन उसने युद्ध करने का कोई प्रशिक्षण प्राप्त नहीं किया था, फिर भी अपने साहस और वीरता के बल पर अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए थे। उसने युद्ध-क्षेत्र में लेफ्टिनेंट वॉकर को घायल कर दिया। यमुना तट पर अंग्रेजों को पराजित किया और ग्वालियर पर अधिकार कर लिया। उसने जनरल स्मिथ को भी अपने युद्ध-कौशल के आधार पर मात दी। अन्त में जब उसे ह्यूरोज की सेना ने घेर लिया तब भी वह मार-काट करती हुई शत्रु-सेना के पार चली गई। लेकिन नाला देखकर जब उसका नया घोड़ा अड़ गया, फिर भी उस सिंहनी ने अनेक सैनिकों को मार गिराया। रानी पर सब ओर से वार हो रहे थे। वह घायल होकर गिर गई और वीरगति को प्राप्त हुई।

अथवा

17. तेरा स्मारक तू ही होगी, तू खुद अमिट निशानी थी। कवयित्री ने झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के विषय में ऐसा क्यों कहा है?

उत्तर :

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई परम तेजस्विनी, वीरता की साक्षात् अवतार और अद्भुत साहसी थी। उसके वीरतापूर्ण कृत्यों ने स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेज सैनिकों और सैन्य अधिकारियों के दाँत खट्टे कर दिये थे। उसने लड़ते-लड़ते युद्ध-क्षेत्र में वीरगति प्राप्त की। उसका बलिदान व्यर्थ नहीं गया, उसने भारत में स्वतन्त्रता की वह बलवती भावना जाग्रत की, जिससे देश स्वतंत्रता सूर्य के दर्शन करने में सफल हुआ। कवयित्री कहती हैं कि कभी ऐसा हो सकता है कि इतिहास उसे वैसा महत्त्व न दे, सच्चाई को दबा दिया जाए, किन्तु कृतज्ञ भारतवासी रानी के बलिदान को याद रखेंगे। रानी के कार्य स्वयं उसके स्मारक सिद्ध होंगे, स्मारक का काम उसके महान् कार्य स्वयं करेंगे। इस प्रकार वे अमर रहेंगी।

18. संत पीपा का चरित्र-चित्रण कीजिए। 6

उत्तर :

लोक संत पीपा का जीवन आरम्भ में भले ही राज-वैभव से सम्पन्न रहा, परन्तु स्वामी रामानन्द से दीक्षा लेने के बाद इन्होंने वैराग्य धारण किया और सम्पूर्ण सुखों को त्याग कर समाज-सुधारक ज्ञानी संत बने। इनके चरित्र की अनेक विशेषताओं का पता चलता है, जिनमें प्रमुख विशेषताएँ ये हैं-

1. **निर्गुण उपासक –** संत पीपा आत्मा और परमात्मा को एक मानते थे। वे माया-मोह से पूरी तरह विमुक्त, निर्गुण ज्ञानधारा के भक्त थे।
2. **समाज-सुधारक –** अन्य संतों की तरह पीपा भी समाज में व्याप्त बाह्यडम्बरों, रूढ़ियों एवं अन्धविश्वासों के विरोधी थे। वे समाज को दुर्व्यसनों एवं अज्ञान से मुक्त करने के लिए उपदेश देते रहते थे।
3. **निम्न वर्ग के हितैषी –** संत पीपा समाज के उपेक्षित एवं निम्न वर्ग के हृदय में आत्मविश्वास, दृढ़ता, हिम्मत एवं आत्मनिर्भरता जगाने का प्रयास करते रहे। वे उनमें रूढ़ि-बन्धनों को तोड़ने के लिए ज्ञान-चेतना का प्रसार करते रहे।
4. **माया-लोभ से मुक्त –** पीपा चौहान राजवंश के राजा थे। उन्होंने अपने राजसुख-वैभव को त्यागकर माया और लोभ-लालच से मुक्त होने का अद्भुत कार्य किया। उन्होंने वैराग्य धारण कर लोक-जीवन को पवित्राचरण का उपदेश दिया और निर्गुण भक्ति को श्रेष्ठ बताया। उन्होंने सच्चे संत की तरह अपना जीवन व्यतीत किया।

अथवा

18. लोक संत पीपा ने निर्गुण काव्यधारा में किस प्रकार योगदान दिया है? लिखिए।

उत्तर :

मध्यकालीन भक्तिधारा में स्वामी रामानन्द के सभी शिष्यों का विशेष योगदान माना जाता है। इनमें संत कबीर, पीपा, रैदास, धन्ना और सेन संत एवं कवि दोनों रूपों में सुप्रसिद्ध हैं। इनमें कबीर के साथ ही धन्ना, रैदास और पीपा का साहित्य या वाणियाँ मुख्य हैं। जहाँ तक संत पीपा का सम्बन्ध है, इनका कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है, परन्तु इनके कुछ पद ग्रन्थ साहब में मिलते हैं। राजस्थान के दक्षिणी भाग के लोक-जीवन में संत पीपा की वाणी का मौखिक प्रचलन दिखाई देता है। इनकी वाणी साखी की तरह है जिनमें लोकानुभव का सुन्दर समावेश हुआ है।

मध्यकालीन भारत में समाज में बाह्याडम्बरों, रूढ़ियों, दुर्व्यसनों एवं अन्धविश्वासों का बोलबाला था। मूर्तिपूजा एवं बहु-देववाद का जोर था। संत कवि होने से पीपा ने अपनी वाणियों के माध्यम से रूढ़ियों एवं अन्धविश्वासों का विरोध किया। इन्होंने मूर्तिपूजा का विरोध कर निर्गुण-निराकार परमब्रह्म की भक्ति और आत्मा व परमात्मा की एकता पर जोर दिया। संत पीपा ने परमात्मा को सर्वत्र व्याप्त, सबका पिता और सर्वशक्तिमान बताया। इस प्रकार निर्गुण भक्तिधारा के साथ ही समाज-सुधार का कार्य करने से मध्यकालीन संत परम्परा में संत पीपा का विशिष्ट महत्त्व व्याप्त है।

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।

19. सावन के माह में कामदेव नायिका को परेशान कैसे कर रहा है? 2

उत्तर :

सावन के माह में नायिका का प्रिय उसे आने के लिए कह गया था। वर्षा ऋतु अत्यधिक सुन्दर और कामोद्दीपक होती है। इस ऋतु में वर्षा की झड़ी, बिजली की चमक, इन्द्रधनुष का प्रकाश, पक्षियों का कलरव, शीतल हवा के झोंके नायिका को प्रियतम की याद दिलाने लगते हैं और कामदेव उसे परेशान करने लगता है।

20. दयानिधि से क्या तात्पर्य है? 2

उत्तर :

दयानिधि से तात्पर्य दया के भण्डार अथवा अत्यन्त दयालु शक्ति से है और ऐसी शक्ति ईश्वर के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं हो सकती। अतः दयानिधि का तात्पर्य- दया के असीम सागर **परमात्मा** से है।

21. माँ ने बेटी को क्या-क्या सीख दी? 2

उत्तर :

माँ ने बेटी को निम्नलिखित सीख दी-

1. अपने सौन्दर्य और उसकी प्रशंसा पर कभी मुग्ध न होना।
2. वस्त्र और आभूषण स्त्री जाति के बंधन हैं। इनके लोभ में फँसकर अपनी स्वतंत्रता मत खोना।
3. लड़की जैसी कोमलता बनाये रखना, पर उसे अपनी कमजोरी मत बनने देना।
4. घर-गृहस्थी के सामान्य कार्य तो करना, किन्तु अत्याचार न सहना।
5. वह उस आग की तपन का भी ध्यान रखे जो रोटी सेंकने के काम आती है। कहीं ऐसा न हो कि वही उसको जला जाये।

22. यह सारा दुराचार स्त्रियों के पढ़ाने का ही कुफल है। पंक्ति में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर :

लेखक ने इस कथन के द्वारा उन अहंकारी पुरुषों पर व्यंग्य किया है जो स्त्री-शिक्षा के विरोधी है। यदि कोई सुशिक्षित एवं बुद्धिमती स्त्री अपने सुसंगत तर्कों से किसी पुरुष को हरा देती है अथवा शास्त्रार्थ में सफल रहती है, तो वे इसे स्त्री-शिक्षा का दुराचार और कुफल मानते हैं। ऐसे अहंकारी पुरुष स्वयं तो बुद्धिहीन होते हैं तथा अपनी इस बुद्धिहीनता के लिए स्त्रियों को दोष देते हैं। वे स्त्रियों को पढ़ाना दुराचार को बढ़ावा देना समझते हैं।

23. तुम्हारी निन्दा वही करेगा जिसकी तुमने भलाई की है। कथन को स्पष्ट करें। 2

उत्तर :

जिस व्यक्ति की तुम भलाई करोगे वही व्यक्ति तुम्हारी निन्दा करेगा, क्योंकि सम्बन्धित व्यक्ति तुम्हारा विश्वास प्राप्त कर तुम्हारे बारे में सब कुछ जान लेगा और उसके मन से तुम्हारे व्यक्तित्व का वह प्रभाव समाप्त हो जायेगा जो दूसरों के मन पर अभी तक पड़ा हुआ है। फलस्वरूप तुमसे काम निकल जाने के बाद वह स्वयं तुम्हारी निन्दा करने लगेगा। काम पड़ने पर तो वह प्रशंसा करेगा, हर समय आगे-पीछे रहेगा, परन्तु काम बन जाने पर वह पीठ पीछे आपकी निन्दा करता रहेगा।

24. एक अच्छे नागरिक होने के नाते सड़क पर दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति की आप किस प्रकार सहायता करेंगे? 2

उत्तर :

यदि सड़क पर कोई दुर्घटना हो जाए, तो एक अच्छे नागरिक के नाते हम घायल लोग या लोगों की सहायता बड़ी शीघ्रता से करेंगे। हम घायलों को किसी वाहन की सहायता से या दुर्घटना-एम्बुलेंस की सहायता से अस्पताल पहुँचाएगे। साथ ही पुलिस को तथा घायलों के परिजनों को सूचित करेंगे। डॉक्टरों से दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति का शीघ्र इलाज कराने का आग्रह करेंगे। हम अपनी ओर से भी प्राथमिक चिकित्सा उपलब्ध कराने का पूरा प्रयास करेंगे।

25. खेतों की मिट्टी पथराई हुई क्यों है? 1

उत्तर :

ग्रीष्म के प्रचण्ड ताप से खेतों की मिट्टी पत्थर जैसी कठोर हो गई थी।

26. उषा की लाली कविता में हिमगिरि कैसा दिखाई दे रहा था? 1

उत्तर :

उषा की लाली कविता में हिमगिरि सोने जैसे शिखरों वाला दिखाई दे रहा था।

27. दादू ने अपनी रोजी-रोटी के बारे में क्या कहा है? 1

उत्तर :

दादू ने अपनी रोजी-रोटी के बारे में कहा है कि राम ही मेरा रोजगार है, वही मेरी सम्पत्ति है और उसी राम के प्रसाद से मेरे परिवार का भरण-पोषण होता है। दादू राम (ईश्वर) को ही अपनी रोजी-रोटी और भरण-पोषण कर्त्ता मानते हैं।

28. अत्रि ऋषि की पत्नी ने किस विषय पर व्याख्यान दिया था? 1

उत्तर :

अत्रि ऋषि की पत्नी ने पत्नी धर्म पर व्याख्यान दिया था।

29. कल और आज कविता के द्वारा क्या सन्देश दिया गया है? स्पष्ट लिखिए। 4

उत्तर :

कल और आज कविता में कवि नागार्जुन ने प्रगतिशील विचारधारा को व्यक्त किया है। इस कविता में यह बताया गया है कि एक ऋतु के बाद दूसरी ऋतु आती है, कल के बाद आज आता है। अतः समय सदैव गतिशील रहता है। ग्रीष्म ऋतु में लू-ताप से सभी प्राणी परेशान रहते हैं, किसान इस ऋतु में निराश-हताश रहते हैं, परन्तु जैसे ही ग्रीष्म ऋतु समाप्त होती है और वर्षा ऋतु आती है, तो सभी प्राणी प्रसन्न हो जाते हैं। किसान भी वर्षा ऋतु के आने से खुश हो जाते हैं और वे खेतों की निराई-गुड़ाई में लग जाते हैं। उन्हें खेतों से अच्छी उपज मिलने की आशा होने लगती है।

ग्रीष्म के बाद वर्षा ऋतु आने से मेंढ़क, मोर आदि के साथ झींगुर आदि छोटे जीव भी अपनी खुशी व्यक्त करते हैं। धरती पर चारों तरफ हरियाली फैल जाती है। इस तरह का वर्णन कर प्रस्तुत कविता के द्वारा यह सन्देश दिया गया है कि विपरित समय आने पर निराश नहीं होना चाहिए। समय बदलता रहता है। बुरे समय के बाद अच्छा समय अवश्य आता है। इसलिए अच्छा समय आने पर उसका सदुपयोग करना चाहिए।

सभी गुरूजनों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर प्राप्त करने के लिए 9460377092 पर सिर्फ TEACHER शब्द व्हाट्सएप्प करें। आपसे संपर्क कर आपको विशेष रूप से मॉडल पेपर भेजे जाऐंगे।

सामाजिक जीवन में खुशहाली बनी रहे, इसका प्रयत्न करना चाहिए।

30. मोहन राकेश के साहित्यिक व्यक्तित्व का परिचय दीजिए। 4

उत्तर :

नयी कहानी आन्दोलन के अग्रणी कथाकार मोहन राकेश का जन्म सन् 1925 में अमृतसर में तथा निधन सन् 1972 में दिल्ली में हुआ। पहले लाहौर से फिर पंजाब विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कर ये अध्यापन कार्य से जुड़े रहे। कुछ वर्षों तक कहानी की प्रसिद्ध पत्रिका **सारिका** का सम्पादन किया। मोहन राकेश बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार थे। उन्होंने भारतीय और पश्चिमी नाट्य-शैली को जोड़कर हिन्दी में एक नयी शैली का सूत्रपात किया। **आषाढ़ का एक दिन**, **लहरों के राजहंस** तथा **आधे-अधूरे** इनके प्रसिद्ध नाटक है।

कथाकार के रूप में मोहन राकेश का नाम स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद के नये लेखकों में अग्रणी है। इन्होंने कहानी-विधा को नया रूप देने का विशेष प्रयास किया। अंधेरे बन्द कमरे, अन्तराल तथा न आने वाला कल, आदि इनके प्रमुख उपन्यास हैं, तो इंसान के खण्डहर, नये बादल, एक और जिन्दगी, फौलाद का आकाश तथा जानवर और जानवर आदि इनके चर्चित कहानी-संग्रह हैं। इन्होंने परिवेश और बकलम खुद शीर्षक-कृतियों में अपनी आलोचनात्मक-क्षमता व्यक्त की है। तो आखिरी चट्टान तक यात्रा-वृत्तान्त से अपने अनुभवों के दृष्टांत उपस्थित किये हैं। कम जीवन-काल पाकर भी मोहन राकेश ने अपने साहित्यिक व्यक्तित्व को यशस्वी बनाया। इन्हें संगीत नाटक अकादमी से पुरस्कार सम्मान प्राप्त हुआ।

****

सत्र 2020-21 से नये पाठ्यक्रमानुसार सभी कक्षाओं के सभी विषयों की टेक्स्ट बुक एवं सभी प्रकार की सहायक अध्ययन सामग्री विद्यार्थियों को मोबाइल पर व्हाट्सएप द्वारा एवं वेबसाइट www.rbse.online पर उपलब्ध करवायी जाएगी। इसके लिये विद्यार्थियों से किसी भी प्रकार का कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा। इसके लिये विद्यार्थियों को किसी भी प्रकार का कोई OTP Verification या Email द्वारा Verification नहीं देना होगा। हमारा व्हाट्सएप नम्बर जानने या अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिये वेबसाइट www.rbse.online पर विजिट करें।

सभी विद्यार्थियों से निवेदन है कि RBSE के सॉल्वड मॉडल पेपर/डेस्क वर्क प्राप्त करने के लिए 9460377092 को अपनी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में एड करें। आपकी क्लास के व्हाट्सएप्प ग्रुप में पेपर भेज दिए जाएंगे।